PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA

BIRLA ROAD, PORBANDAR-360575 PH. 0286-2990101

2025-26

ID For Student



UID NUMBER	-	011035119003533
PEN NUMBER	-	20337051740
STUDENT NAME	-	RAIWATH CHAUHAN
FATHER NAME	-	PRASHANT MANSUKHBHAI CHAUHAN
DATE OF BIRTH	-	07/10/2013
MOBILE NO.	-	9925155108
BLOOD GROUP	-	O+
ADDRESSS	-	GAYATRI PALACE, 2ND FLOOR, FLAT-203,BH, NEW SBI REGIONAL CENTRE, PORBANDAR

PRINCIPAL

CLASS - VII-B

अनुलग्नक -2

पंजीकरण प्रपत्र

हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर मौलिक कविता



1. आवेदक का नाम: **रैवथ प्रशांत चौहान**
2. पिता का नाम: **प्रशांत मनसुखलाल चौहान**
3. लिंग (पुरुष/महिला): **पुरुष**
4. जन्म तिथि: **०७/१०/२०१३**
5. पूरा पता (पिन कोड सहित): गायत्री पैलेस ,दूजा माल ,फ्लेट नंबर : २०३ ,सुंदर पार्क, छाया ,एयरपोर्ट रोड ,एसबीआई प्रादेशिक केंद्र के पीछे ,पोरबंदर, पिन कोड : ३६० ५७५
6. मोबाइल नंबर: ९९२५१५५१०८
7. ईमेल (स्पष्ट अक्षरों में): parmita.mehta80@gmail.com
8. विद्यालय का नाम व पता: पी एम् श्री केंन्द्रिय विद्यालय पोरबंदर
9. मैं यह प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि
   i. मैं रैवथ प्रशांत चौहान पुत्र श्री प्रशांत मनसुखलाल चौहान भारतीय नागरिक हूँ।
   ii. कविता मेरे द्वारा मूल रूप से लिखी गई है और एआई जनित नहीं है अथवा एआई के प्रभाव से रहित है।
   iii. मेरी कविता को इस प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रविष्ट करने से किसी अन्य व्यक्ति के कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं होता है और कविता में दिये गए आंकड़ों एवं तथ्यों के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ।

मैं वचन देता हूँ/देती हूँ कि मैं हिन्दी पखवाड़े के दौरान मौलिक कविता प्रतियोगिता विनियम के उपबंधों का पालन करूंगा/करूंगी।

दिनांक: २७ सितम्बर २०२५
स्थान: पी एम् श्री केंन्द्रिय विद्यालय पोरबंदर

हस्ताक्षर 27/09/2025


BEST
QUALITY

दिनांक : 29/09/2024

हिन्दी पखवाड़े में आयोजित एक मौलिक कविता

आवेदक का नाम : दैवज्ञ प्रशांत चौहान
कार्यालय - उ ब - सेल नं : 1 यू
पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय
फरीदाबाद

मुख्य विषय : समसामयिक मुद्दा

"शिक्षक : उपेक्षित शेर की दहाड़"

लड़का हूँ मैं, आग का गोला जलता,
लड़कियों की प्राथमिकता से दिल जलता-भुनता!
क्यों सिर्फ़ वो ही सशक्त, हम क्यों भुलाऊ?
उपेक्षा की आग में, मैं अब दहकता-उबलता!

कहते हैं "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,"
पर बेटों की आवाज़, कहीं दबा दी गई आज?
बाल सौरभ राजपूत आज राजा रघुवंशी की बारी,
कभी 'मुस्कान' कभी 'सोनम' ने की गलती भारी!!

नहीं सहूँगा ये अन्याय, ये पक्षपात भारी,
लड़कियों का हर सपना चमके, हमारा क्यों अँधियारा?
मैं चट्टान बनूँगा, दीवारें तोड़ डालूँगा,
उपेक्षित समुदाय का डंडा, मुद्दा मैं दिखवाऊँगा!

आँसू मेरे, जज्बात मेरे, क्यों दबाए जाते?
"मर्द बन" की चीखों से हम क्यों सताए जाते?
अब विद्रोह की आग, दिल में सुलगाऊँगा,
इस रूढ़ि को चीर, नया इतिहास लिखवाऊँगा।

दुनिया झुक जाएगी, मेरी दहाड़ से काँपेगी,
लड़के-लड़कियाँ बराबर, ये पुकार अब गूँजेगी!
उपेक्षा की जंजीरें तोड़, मैं शेर बन दहाड़ूँगा,
सशक्तिकरण सबका, अब मोर्चा मैं संभालूँगा!